विचार बिन्दु

वह जो अपने प्रियजनों से अत्यधिक जुड़ा हुआ है। उसे चिंता और भय का सामना करना पड़ता है। क्योंकि सभी दुःखों की जड़ लगाव है। इसलिए खुश रहने के लिए लगाव छोड़ दीजिये। -चाणक्य सुविचार

बंपर बारिश से खुशहाली की बयार के साथ खेत-खलिहान को नुकसान

राजस्थान में चालू मानसून में भारी बारिश से जहाँ भूजल स्तर में वृद्धि के साथ पेयजल किल्लत वाले क्षेत्रों में ख़ुशी की लहर देखी जा रही है वहीं फसलों को नुकसान पहुँचने से किसानों के चेहरों पर चिंता से भजन लाल सरकार भी चिंतित है। राज्य सरकार किसानों की क्षतिपूर्ति के लिए मुआवजा देने की तैयारी में है। मुख्यमंत्री भजन लाल के निर्देश पर मंत्रीगण जिलों का दौरा कर भारी वर्षा और अतिवृष्टि से फसलों सहित विभिन्न क्षेत्रों में हुए नुक्सान का ब्यौरा एकत्रित कर रहे है। सरकार कृषि विभाग के अधिकारियों से प्रदेश में हो रहे नुकसान का फीडबैक ले रही हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार सरकार ने राजस्व विभाग के माध्यम से एक पखवाड़े पहले ही गिरदावरी के लिए कह दिया था। एक सितंबर से प्रदेश में गिरदावरी की प्रक्रिया शुरू कर दी गई ताकि किसान को कितना नुकसान हुआ हुआ है तथा किसको कितना उसको मुआवजा देना है, इसका निर्धारण हो पाए। प्रदेश में तीन इंश्योरेंस कंपनियां काम कर रही है जो जाँच पड़ताल कर किसानों के नुकसान की भरपाई की कार्यवाही में जुटी है। किसान आयोग अध्यक्ष ने अतिवृष्टि से फसलों में हो रहे खराबे पर चिंता जाहिर की है। किसान आयोग अध्यक्ष ने कहा है कि कि सरकार किसानों की पीड़ा को जानती है और खुद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा नियमित मॉनिटरिंग कर रहे हैं। किसान आयोग के मुताबिक प्रदेश में लगातार हो रही बरसात से सब तरफ खुशी का माहौल है। आने वाले समय में पेयजल और सिंचाई के पानी की समस्या का समाधान हो रहा है। अत्यधिक बरसात से फसलों में खराबी भी सामने आ रही है। सरकार फसलों में हो रहे खराबी से चिंतित है।

राजस्थान में चालू मानसून में सर्वत्र बंपर वर्षा से खेत-खलिहान से लेकर पेयजल की कमी वाले क्षेत्रों में ख़ुशी की लहर है। हालांकि अतिवृष्टि और बाढ़ से जन जीवन अस्त व्यस्त होने के साथ जानमाल के नुक्सान की जानकारी भी मिली है। इसके बावजूद किसानों का कहना है हमारी नदियों और अन्य स्त्रोतों में पानी की अच्छी आवक होने से भूमिगत जलस्तर में आशातीत रूप से वृद्धि हुई है। अनेक नदियां वर्षों से सूखी पड़ी थी, उनमें भी पानी आया है।

भूजल स्तर में वृद्धि होने से डार्क जोन क्षेत्रों के कुओं, हैडपम्पों और ट्ययूबवेल सहित अन्य स्त्रोतों में पानी आने से पेयजल की किल्लत ख़त्म होने के आसार है। प्रदेश के लगभग सभी बांध पानी से लबालब भर गए है जिससे सिंचाई और पेयजल आपूर्ति में अच्छी मदद मिलेगी। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार पिछले दस से पचास वर्षों की अवधि में सूखे की मार झेल रही अनेक जिलों की नदियों में पानी की आवक से लोगों के चेहरों पर ख़ुशी देखी जा रही है। मानसून ने पिछले 50 सालों का रिकार्ड तोड़ दिया है। रिपोर्ट में कहा गया है पानी की अच्छी आवक से भूमिगत जलस्तर 15 प्रतिशत तक रिचार्ज होने की उम्मीद है।

मौसम विभाग के मुताबिक प्रदेश में चालू मानसून में अब तक औसत से 62 प्रतिशत ज्यादा अर्थात 650 मि.मी बारिश हो चुकी है। बारिश ने वर्षों पचास के बाद प्रदेश में यह नया रिकॉर्ड बनाया है। अभी मानसून ख़त्म नहीं हुआ है और यह आंकड़ा अभी और बढ़ेगा। मिली जानकारी के मुताबिक प्रदेश के साढ़े तीन सौ से अधिक बांध पानी से लबालब भर चुके है। अत्यधिक पानी की आवक से लगभग 200 बांधों के गेट खोले जा चुके है। प्रदेश के सभी 691 बांधों में 85 प्रतिशत पानी आ चुका है और यह क्रम अनवरत चालू है। बांधों में पानी की अच्छी आवक से अगले एक साल तक पानी की किल्लत का सामना नहीं करना पड़ेगा।

सरकार कृषि विभाग के अधिकारियों से प्रदेश में हो रहे नुकसान का फीडबैक ले रही हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार सरकार ने राजस्व विभाग के माध्यम से एक पखवाड़े पहले ही गिरदावरी के लिए कह दिया था। एक सितंबर से प्रदेश में गिरदावरी की प्रक्रिया शुरू कर दी गई ताकि किसान को कितना नुकसान हुआ हुआ है तथा किसको कितना उसको मुआवजा देना है, इसका निर्धारण हो पाए।

राज्य में नदी, नालों, तालाबों, झीलों, कुओं और बांधों में पानी की अच्छी आवक से भूजल स्तर में वृद्धि के साथ पेयजल किल्लत वाले क्षेत्रों में ख़ुशी की लहर देखी जा रही है। वैज्ञानिकों के मुताबिक भूजल स्तर को फिर से जीवंत करने में वर्षा जल मदद करता है। पेयजल का मुख्य स्त्रोत भूगर्भ जल ही है। भूजल वह जल होता है जो चट्टानों और मिट्टी से रिस जाता है और भूमि के नीचे जमा हो जाता है। जिन चट्टानों में भूजल जमा होता है, उन्हें जलभृत कहा जाता है। भारी वर्षा से जल स्तर बढ़ सकता है और इसके विपरीत, भूजल का लगातार दोहन करने से इसका स्तर गिर भी सकता है।

गौरतलब है राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। राजस्थान रेतीला, बंजर, पर्वतीय और उपजाऊ कच्छारी मिट्टी से मिलकर बना है। राज्य की अर्थ व्यवस्था कृषि एवं ग्रामीण आधारित है। कृषि और पशु पालन यहां के निवासियों के मुख्य रोजगार है। वर्षा की अनियमितता के कारण यह प्रदेश अनेकों बार सूखे और अकाल का शिकार हुआ। मगर प्रदेशवासियों ने विपरीत स्थितियो में भी जीना सीखा और अपने बुलन्द हौसले को बनाये रखा।

राजस्थान अपनी जल-जरूरतों की पूर्ति के लिए सबसे ज्यादा भू-जल पर ही निर्भर है। यह ग्रामीण एवं शहरी घरेलू जलापूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। पिछले कुछ वर्षों में लाखों निजी कुओं के निर्माण से भूजल के दोहन में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। इसके अलावा खेती में सिंचाई भूजल के माध्यम से होती है। जिसके परिणामस्वरूप भूजल में गिरावट आई है। भू-जल दोहन के अनुपात में जल की प्राप्ति नहीं होने से संकट बढ़ रहा है। घटते भू-जल के लिए सबसे प्रमुख कारण उसका अनियन्त्रित और अनवरत दोहन है। इस वर्ष चालू मानसून में अनेक ऐसी नदियों और तालाबों में पानी आने के समाचार भी मिल रहे जो वर्षों से सूखे की मार झेल रहे थे। भूजल खेती और सिंचाई के कार्य में बहुतायत से उपयोग में आता है।

'इंटरकनेक्टेड डिजास्टर रिस्क रिपोर्ट 2023' शीर्षक से संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय-पर्यावरण और मानव सुरक्षा संस्थान की एक रिपोर्ट में बताया गया है, भूजल की वर्तमान स्थिति को सुधारने के लिये भूजल का स्तर और न गिरे इस दिशा में काम किए जाने के अलावा उचित उपायों से भूजल संवर्धन की व्यवस्था हमें करनी होगी। पानी की कमी के चलते निरन्तर खोदे जा रहे गहरे कुओं और ट्ययूबवेलों द्वारा भूमिगत जल का अन्धाधुन्ध दोहन होने से भूजल का स्तर निरन्तर घटता जा रहा है। देश में जल संकट का एक बड़ा कारण यह है कि जैसे-जैसे सिंचित भूमि का क्षेत्रफल बढ़ता गया वैसे-वैसे भूगर्भ के जल के स्तर में गिरावट आई है। भूजल दोहन के अंधाधुंध दुरुपयोग को यदि समय रहते रोका नहीं गया, तो आने वाली पीढियों को इसके भयानक परिणाम भुगतने होंगे। सरकार को जनता में जागरूकता लाने के लिए विशेष प्रबन्ध और उपाय करने होंगे। रिपोर्ट के अनुसार देश में कृषि के लिए लगभग 70 प्रतिशत भूजल का उपयोग किया जाता है। भारत दुनिया में भूजल का सबसे बड़ा यूजर है, जो यूएसए और चीन के कुल उपयोग से भी अधिक है। भारत का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र देश की बढ़ती 1.4 अरब आबादी के लिए रोटी की टोकरी के रूप में काम करता है।

-अतिथि सम्पादक,
बाल मुकुंद ओझा,
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

भारत के संविधान के होते हुए, क्या सार्थकता है मनु स्मृति पर यदा-कदा की निरर्थक बहस का?

महावीर सिंह

भारत एक संवैधानिक राष्ट्र है। इसका शासन संविधान के अनुसार चलता है। हमारा संविधान उन मानवीय मूल्यों पर आधारित है जिनको बीच में रख कर स्वतंत्रता का आंदोलन चला और अंततोगत्वा भारत वैसा राष्ट्र बना जैसा ज्ञात इतिहास में पूर्व में कभी नहीं था। कैबिनेट मिसन के प्रावधानों के अनुसार 1946 संविधान निर्मात्री सभा का गठन हुआ। इस सभा में स्वतंत्रता के जंग में शामिल सभी संगठनों, विभिन्न समुदायों के 229 व देशी रियासतों के भी 70 प्रतिनिधि थे। कुछ संगठन जो आजादी की लड़ाई के प्रति उदासीन थे उनके भी कुछ-कुछ प्रतिनिधि थे। इस प्रकार की जनता की संविधान निर्मात्री सभा नें हर मुद्दे पर व्यापक बहस के बाद संविधान तैयार किया जिसके अनुसार गत 74 साल से भारत का शासन चल रहा है। इस संवैधानिक व्यवस्था से आम लोगों की बहुत सी आकांक्षाए पूरी हुई, कुछ नहीं भी हुई।

पुराने राजाओं की राज व्यवस्थाओं में कुल मिलाकर एक राजा व उसके द्वारा बनाए मंत्री मंडल द्वारा ही शासन का संचालन होता था। ऐसे मंत्री मंडलों में अधिकांशत: उच्चवर्णों के लोग ही होते थे। ऐसे लोगों के मंत्रिमंडल के निर्णय उन्ही वर्गों के हितों को सर्वोपरि रख कर होता था। नि:सन्देह पूर्व में भी कुछ अच्छे राजा हुए यथा अशोक महान, हर्षवर्धन व उत्तर-दक्षिण के गुप्त सम्राज्य के राजा, दक्षिण के कुछ चोल और कुछ अन्य। अब जनता द्वारा चुनी संसद कानून बनाती अर्थात राजा के अधिकार जनता में हैं। जनता के चुने हुए लोग ही संसद द्वारा अनुमोदित कानूनों,नीतियों की अनुपालन करते, कराते है। अब मनुस्मृति लिखी बातों के लिए कोई स्थान है ही नहीं तो फिर यदा कदा मीडिया में अर्थहीन डिबेट क्यों चलती हैं? वर्तमान में मनुस्मृति का पठन-पाठन, चर्चा, कानून के विद्वानों, विद्यार्थियों, वकीलों के लिए यह समझने के लिए तो हो सकता है कि समाजों में कानून की क्यों आवश्यकता है और विभिन्न ऐतिहासिक काल खंडों में विभिन्न विषयों के कानून कैसे-कैसे बने व उनमें समय-समय पर क्या और क्यों बदलाव हुए है। इस से अधिक इसका कोई महत्व नहीं।

मनु स्मृति में बहुत से श्लोक मनुष्यों के आपसी रिश्तों, व्यवहार में शिष्टाचार, जन्म, शादी, श्राद्ध से सम्बंधित है। इन में से अधिकांश में कोई आपत्ति वाली बात नहीं है। आपत्ति केवल इतनी है यह सारे श्लोक केवल तीन उच्च वर्णों के कार्यों में ही उपयोग में लिए जाते है। शुद्र वर्ग के लिए नही। इस से यह झलक मिलती है कि तत्समय शुद्र वर्ग के लिए सेवा आदि कार्य तो निर्धारित थे किन्तु उन्हें उच्च तीन वर्गों वाले समाज से अलग - थलग ही रखा गया।

आइए जरा मोटे रूप से देखें यह मनुस्मृति है क्या? यह एक पुरानी विधि संहिता है। कितनी पुरानी है पुख्ता रूप से कोई कुछ नहीं कह सकता। कुछ इसे 2, 5 से 10 हजार साल पुरानी बाताते है। कुछ तो इसे सृष्टि के सृजन के साथ जोड़ने में भी नहीं हिचकिचाते। उनके अनुसार मनु ब्रह्मा के पुत्र है। कुछ लोग कल्पना दौड़ाते है कि हर युग-कल्प में एक मनु होता है जो समाज को व्यवस्थित ढंग से चलाने के नियम-कायदे बनाते और सिखाते हैं।

मनुस्मृति में कुल श्लोक कितने हैं, इस पर भी मतभिन्नता है। भिन्न-भिन्न लोग 2500 से 3000 तक श्लोक मानते हैं। मनुस्मृतियाँ कितनी है इस पर भी एक राय नही। नारद स्मृति, पराशर स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि भी चलन में है। कुछ अन्य स्मृतियों में भी समाज के लिए नियम कायदे बताए है। वैसे तो ब्रिटिश हुकूमत के समय ही मनुस्मृति के विपरीत कानून बनने शुरू होगए थे जैसे बाल विवाह निषेध अधिनियम या 1834-35 के पश्चात सभी वर्गों लोगों के लिए शिक्षा प्राप्ति के लिए सुविधाओं का विस्तार व समानता आदि। फिर समय-समय पर इस विषय को क्यों चर्चा में लाया जाता है? मनुस्मृति पर पहला मुखर विरोध डॉक्टर बीआर अम्बेडकर नें शुरू किया। उन्होंने 25 दिसम्बर 1927 को सार्वजनिक रूप से मनुस्मृति को जलाया। जनता के समक्ष यह विषय रखा कि मनुस्मृति में महिलाओं व वंचित दलित वर्गों के लिए अत्यंत विभेदकारी, गैर बराबरी वाली व परस्पर विरोधी बातें लिखी है। बहुत से दण्ड प्रावधान भी वर्ग के अनुसार अलग-अलग है। उनके अनुसार शिक्षा के प्रसार से नवचेतना आई है और मनुस्मृति जैसी पुरातन कानून संहिताओं के लिए आधुनिक, प्रगतिशील समाज में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

भारत का संविधान 16 नवम्बर 1949 को बनकर तैयार हुआ और 30 नवम्बर 1949 के ऑर्गनाइजर में नव निर्मित संविधान को मनुस्मृति के अनुसार न होने के बिंदु पर आलोचना छपी। आलोचना के मुख्य बिन्दु थे कि संविधान में प्राचीन भारत की संवैधानिक विकास यात्रा, संस्थाओं, शब्दावलियों का बिल्कुल उपयोग नहीं किया गया। मनुस्मृति की सारे संसार में तारीफ की जाती है जो भारतीय हिंदुओं को सहज स्वीकार्य है। कुछ लोग तो यहां तक बोल देते हैं कि हिंदुओं को अंग्रेजों के 200 साल के शासन में उतना नुकसान नहीं हुआ जितना संविधान के कारण हुआ है। तलाक (डिवोर्स कानून) प्रावधानों पर भी ऑर्गनाइजर में एक असहमति वाली टिप्पणी छपी थी। कुछ आगे बढ़ते हुए मनुस्मृति में दिए प्रलय, ब्रह्मा, सृष्टि सृजन व कुछ विवादस्पद श्लोको में से कुछ पर चर्चा कर विषय पर कुछ ओर स्पष्टता लाएं:-(आगे सम्बंधित श्लोक ब्रेकिट में लिखे है, पहला अंक अध्याय दर्शाता है ओर डॉट के बाद की संख्या श्लोक संख्या है।)

इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में ध्यान लीन बैठे मनु जी नें, महर्षियों के आग्रह पर, मनुस्मृति का ज्ञान उनको दिया। श्लोक 1.61 के अनुसार सृष्टि रचना के बाद सबसे पहले मनुस्मृति धर्म शास्त्र बना। श्लोक 1.62 के अनुसार मनु नें कहा कि भृगु नें उनके द्वारा दिया ज्ञान अच्छी तरह समझ लिया और स्मरण कर लिया। मनु के अनुसार आगे से भृगु ऋषि ही यह ज्ञान सब को सुनाएंगे। इसका अर्थ हुआ कि वर्तमानं में जो मनुस्मृतियाँ बाजार में उपलब्ध है उनमें मनु जी के मूल श्लोकों के साथ-साथ, श्रवण करने वालों के स्मरण व उनकी व्याख्या, समझ, ज्ञान, सृजन का भी मेल जरूर होगा। श्रुति आधारित मनु स्मृतियों को बहुत बाद में लिखित रूप दिया गया है। प्रथम अध्याय में ही चार वर्णों के सम्बंध में लिखा है। श्लोक संख्या 1.2 के अनुसार ऋषियों नें मनु के समक्ष इच्छा व्यक्त की थी कि उन्हें चार वर्णों के कर्मों के बारे में बताएं। प्रलय का जिक्र है 1.7 में और 1.10 के अनुसार, सृष्टि का सृजन ईश्वर की इच्छा मात्र हुआ है। 1.11 के अनुसार ईश्वर नें जल में बीज छोड़ा जो एक तीव्र प्रकाश वाले अंडे में परिवर्तित हुआ और उस में से हजारों साल बाद ब्रह्मा निकले। ब्रह्मा ही ब्रह्म हैं।

शेष अगले अंक में.........

-महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

गणेश उत्सव ने आमजन को स्वराज और एकता का संदेश दिया

गोविन्द पारीक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने ब्रिटिश हुकूमत द्वारा धारा 144 के कड़े कानून से व्याप्त भय को खत्म कर इस कानून का विरोध करने के लिए सार्वजनिक रूप से भाद्रपद मास की चतुर्थी से चतुर्दशी तक गणेश उत्सव मनाने की शुरुआत की। अत: भारत की स्वराज प्राप्ति में भगवान गणेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीयों में अंदरूनी रुप से चल रही स्वराज की धारणा को नियंत्रित करने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने वर्ष 1894 में धारा 144 का नया कानून लागू किया। इस कठोर कानून तहत किसी भी स्थान पर 5 से अधिक भारतीय एकत्रित नहीं हो सकते थे। इसके उल्लंघन पर कोड़े मारने का कठोर दण्ड था। सनातन परंपरा में भगवान गणेश को प्रथम पूज्य देवता माना जाता है। पुरातन काल से ही गणेश जी के जन्मोत्सव के रूप में भाद्रपद मास की चतुर्थी को गणेश चतुर्थी का अयोजन किया जाता था। सात वाहन, राष्ट्रकूट तथा चालुक्य वंश के काल में भी गणेश जन्मोत्सव मनाने के प्रमाण मिलते हैं। छत्रपति शिवाजी ने इसे राष्ट्रधर्म और संस्कृति से जोड़ दिया। गणेशजी पेशवाओं के कुलदेवता थे। पेशवाओं ने गणेश उत्सव को व्यापक स्तर पर मनाना प्रांरभ किया।

उत्सव के दौरान प्रतिदिन तिलक आमजन में जोश भरने के लिए बडे क्रांतिकारिओं को आमंत्रित करते थे। बंगाल के सबसे बड़े नेता विपिन चन्द्र पाल 20 अक्टूबर को तथा 21 अक्टूबर को उत्तर भारत के लाला लाजपत राय वहां पहुंचे। अगले वर्ष 1895 में पुणे में 11 गणपति स्थापित किए गए। यह संख्या बढ़ते हुए वर्ष 1896 में 31 और वर्ष 1897 में 100 तक पंहुच गई और कालान्तर में यह संख्या लगातार बढ़ती गई। गणपति उत्सव का आयोजन कालांतर में मुंबई, नागपुर, अहमदनगर आदि अनेक शहरों में किया जाने लगा। पुणे से प्रांरभ हुआ दस दिवसीय गणेश उत्सव अब विश्व के अनेक देशों में अत्यंत उत्साह, उमंग और उल्लास से मनाया जाता है। मान्यता है कि इन 10 दिनों तक भगवान गणेश पृथ्वी पर ही रहकर भक्तों के कष्टों को दूर करते हैं। पौराणिक कथा अनुसार, महर्षि वेदव्यास ने भगवान गणपति जी से महाभारत की रचना को लिपिबद्ध करने की प्रार्थना की। गणेश चतुर्थी के दिन से व्यासजी श्लोक बोलते गए और गणेशजी उसे लिपिबद्ध करते गए। गणेशजी ने लगातार लेखन के बाद 10वें दिन चतुर्दशी पर सरस्वती नदी में स्नान किया। इसी कारण गणेश चतुर्थी के दिन स्थापित गणेश की 10 दिन पूजा करने के बाद प्रतिमा को अनंत चतुर्दशी के दिन विसर्जन कर दिया जाता है।

-गोविन्द पारीक,
अतिरिक्त निदेशक, से.नि.
जनसंपर्क

बाबा भर्तृहरिनाथ के मेले में करीब सात लाख श्रद्धालु पहुंचे

अलवर, (निसं)। अलवर के लोकदेवता बाबा भृर्तहरिनाथ का तीन दिवसीय मेला अपने अन्तिम पड़ाव की ओर है। बुधवार को अलवर में जिले में घर-घर बाबा भर्तृहरि की ज्योत देखी गई। वहीं तीन दिवस के दौरान करीब 6 से 7 लाख श्रद्धालु मेले में पहुंचे, जहां उन्होंने बाबा भर्तृहरिनाथ के दर्शन कर अपनी मन्नतें मांगी। इस लक्खी मेले में जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन ने साथ मिलकर श्रद्धालुओं की सुरक्षा में कोई कोर कसर नहीं छोडी। दूसरी ओर भर्तृहरि मंदिर के पुजारियों द्वारा एवं अन्य साधुओं के आश्रमों द्वारा हजारों लोगों के भोजन के लिए अटूट भण्डारों का आयोजन किया गया।

हर साल भाद्र पक्ष की अष्टमी के दिन यहां लक्खी मेले का आयोजन किया जाता है जिसे माधोगढ़ ग्राम पंचायत द्वारा आयोजित करवाया जाता है। यहां पर उल्लेखनीय है कि बाबा भृर्तहरि का मेला सघन जंगल में आयोजित होता है और लाखों की संख्या में भक्त पहुंचते हैं लेकिन जिला प्रशासन और पुलिस की सूझबूझ के चलते अपराधी मेले में कम ही पहुंचते हैं, फिर भी छुटपुट अपराध होना इतने बड़े मेले में मायने नहीं रखते। मेले में भंडारे का आयोजन मंदिर ट्रस्ट सहित वहां साधुओं के आश्रमों द्वारा संचालित होते हैं जहां लाखों की संख्या में बाबा के भक्त और मेलार्थी प्रसादी पाते हैं। यहां संतोषनाथजी के आश्रम में बाबा सोमवार नाथ द्वारा तीन दिन देसी घी का भंडारा आयोजित हुआ, जिसमें करीब एक लाख श्रद्धालुओं ने प्रसादी पाई। मंदिर के महंत पुजारी पदम नाथ ने जानकारी देते हुए बताया कि जो भी यहां श्रद्धा भाव से बाबा के दर्शनों के लिए आते हैं बाबा भर्तृहरि उनकी सभी मनोकामना को पूरा करते हैं। वहीं बुधवार को मेले में बाबा भर्तृहरि जी महाराज के मेले में आए हुए श्रद्धालु का मंदिर में दर्शन के दौरान मोबाइल गिर गया।

महन्त पदम नाथ पुजारी को मोबाइल मिला वह मोबाइल स्विच ऑफ बताया गया लेकिन महंतजी के द्वारा मोबाइल को घर ले जाकर चार्ज किया और उस मोबाइल को चालू करने पर श्रद्धालु नाहर सिंह मीणा उपखंड रैणी का फोन आया और महंतजी ने फोन को रिसीव कर उनको अपना परिचय दिया। महंतजी ने कहा कि आपका मोबाइल मंदिर परिसर में है आप आ जाइए आपको मोबाइल दे दिया जाएगा। अलवर के नाहर सिंह मीना दूसरे दिन जब भर्तृहरि मंदिर पहुंचा तो महंत जी के द्वारा ईमानदारी का परिचय देते हुए 30 हजार रुपये का मोबाइल दो रुपये नगद तथा मोटरसाइकिल के कागज सौंपे गए।

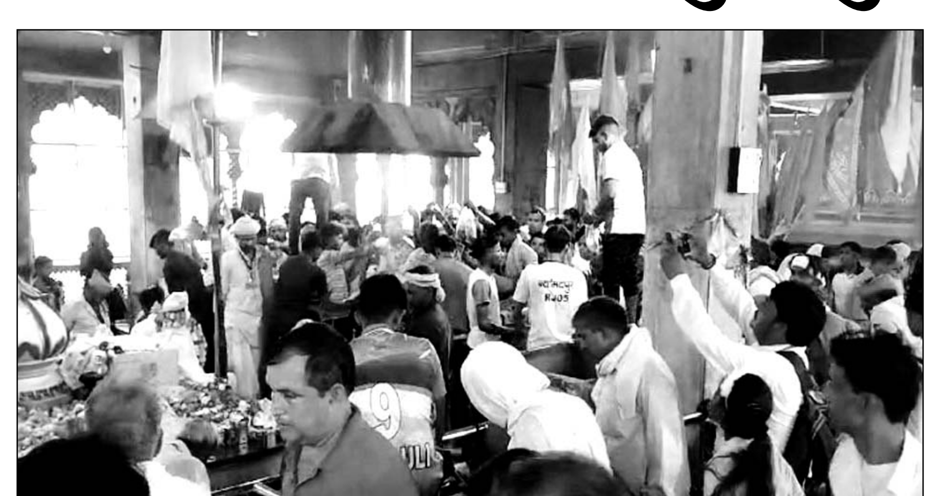

बाबा भृर्तहरिनाथ के मेले में पहुंचे श्रद्धालुओं ने मन्नत मांगी।

- मंदिर के पुजारियों एवं अन्य साधुओं के आश्रमों द्वारा भक्तों के लिए भण्डारों का आयोजन हुआ
- तीन दिन में लाखों श्रद्धालु मेले में पहुंचे, जहां बाबा भर्तृहरिनाथ के दर्शन कर अपनी मन्नतें मांगी

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 12 सितम्बर, 2024

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र रात्रि 9:53 तक, आयुष्मान योग रात्रि 10:41 तक, बालव करण दिन 11:40 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज श्री हरि जयन्ती, श्री चन्द्र नवमी, अदु:ख नवमी, तल नवमी है। आज से भागवत सप्ताह आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:47 तक, चर 10:31 से 12:23 तक, लाभ-अमृत 12:23 से 3:27 तक, शुभ 5:00 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:15, सूर्यास्त 6:32

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

कर्क
स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मकर
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यक्तिगत खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

कुंभ
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।